शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।

वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।8।।

अन्वयः शैशवे अभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् वार्द्धके मुनिवृत्तिनाम्। अन्ते योगेन तनुत्यजाम् (रघूणां अन्वयं वक्ष्ये)।

अनुवादः बाल्यकाल में (विविध) विद्याओं को अभ्यास करने वाले, यौवन काल में विषयभोगों की इच्छा करने वाले, वृद्धावस्था में मुनियों का-सा जीवन बिताने वाले तथा अन्त में योग (समाधि) द्वारा शरीर का त्याग करने वाले-रघुवंशी राजाओं का वर्णन करूंगा।

टिप्पणियां

शैशवे प्रस्तुत श्लोक में जीवन की चार दशाओं अर्थात् चार आश्रमों का निर्देश किया गया है। सूर्यवंशी राजा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास का शास्त्रोक्त रीति से पालन करते थे। हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार इन चार आश्रमों का पालन पुरुष का सबसे बड़ा परमार्थ माना जाता है। जीवन की प्रथम अवस्था ब्रह्मचर्य आश्रम है जो विद्यार्थी जीवन की दशा है, जिसमें विद्या का अध्ययन कर जीवन की आगामी आश्रमों के लिए तैयार किया जाता है। इस आश्रम में बालक प्रायः अपने गुरु के पास रहता है, घर में नहीं। जीवन की द्वितीया अवस्था है गृहस्थाश्रम अर्थात् वैवाहिक जीवन की दशा। विद्या समाप्ति के पश्चात् ब्रह्मचारी अनुकूल कन्या से विवाह कर लौकिक दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करता है। इस आश्रम में वह धर्म का उल्लंघन न करते हुए 'अर्थ' और 'काम' को प्रमुख रूप से उपार्जित करता है। जीवन की तीसरी दशा वानप्रस्थ आश्रम है, जिसमें पुरुष वनवासी ऋषि का जीवन व्यतीत करता है। यह आश्रम वह भूमि है जिसके आधार पर साधक अपने को अंतिम और पूर्ण त्याग के लिए तैयार करता है। इस आश्रम में धीरे

धीरे अर्थ और काम से विरक्त होता हुआ पूर्ण रूप से धर्म का ही अनुष्ठान करता है। जीवन की अन्तिम दशा 'संन्यासाश्रम' है। इस आश्रम में पुरुष परिवार व समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व से पूरी तरह मुक्त हो जाता है। अब उसका एकमात्र उद्देश्य 'मोक्ष' (अर्थात् संसार के बन्धन या जन्म मरण के चक्र से छूट जाना) रह जाता है। आश्रम व्यवस्था हिंदुओं की आदर्श जीवन पद्धति है। सूर्यवंशीय राजाओं ने इसका अनुसरण किया है। इससे उन राजाओं की वर्णाश्रम धर्म के पालन में आस्था प्रकट होती है।

शैशवे शिशोर्भावः । शिशु-अञ् सप्तमी एक वचन। बालकपन से अर्थात् ब्रह्मचर्य अवस्था में।

अभ्यस्तविद्यानाम् अभ्यस्ता विद्या यैस्तै अभ्यस्तविद्याः तेषाम्। निम्नलिखित सब विद्याएं राजाओं के लिए आवश्यक हैं: आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता एवं दण्डनीति (चाणक्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र)।

यौवनम् यूनो भावः। युवन्-अण्। युवावस्था अर्थात् गृहस्थाश्रम में।

विषयैषिणाम् विषयान् एषितुं शीलमेषां विषयैषिणाः तेषां विषयैषिणाम् (उपपद तत्पुरुष)।

वार्द्धके: वृद्धस्य भावः वार्द्धकम्। वृद्ध वुञ् वृद्धावस्था।

मुनीवृत्तिनां मुनीनां वृत्तिरिव वृत्तियेषां ते मुनिवृत्तयः, तेषाम्। मुनिभाव अर्थात् संन्यास।

तनुत्याजाम् तनुं देहं त्यजन्ति इति तनुत्यजः, तेषाम्। उपपद तत्पुरुष। तनु-त्यज्-क्विप्, षष्ठी बहुवचन

योगेन योग, ईश्वर ध्यान के माध्यम से।